समकालीन हिंदी कविता में चेतना के विविध आयाम

संपादक

डॉ. रजनी शिखरे, संतोष नागरे

Scanned with CamScanner

मूल्य : पाँच सौ रुपये मात्र

ISBN 978-81-944045-2-1

पुस्तक : समकालीन हिंदी कविता में चेतना के विविध आयाम

संपादक : डॉ. रजनी शिखरे

संतोष नागरे

प्रकाशक : विद्या प्रकाशन

सी, 449, गुजैनी, कानपुर-22

दूरभाष : 0512 - 2285003

भ्रमण ध्वनि : 09415133173

E-mail : vidyaprakashan.knp@gmail.com

Website : www.vidyaprakashankanpur.com

संस्करण : प्रथम 2019 ई.

मूल्य : 500.00 रुपये मात्र

शब्द सज्जा : यश ग्राफिक्स, कानपुर

मुद्रक : श्री पूजा प्रिंटर्स, नौबस्ता- कानपुर

Scanned with CamScanner

अनुक्रमणिका

1.	समकालीनता और हिंदी कविता	–प्रो. हणमंतराव पाटील	19-23
2.	समकालीन हिंदी कविता में राजनीतिक चेतना	–प्रो. सुधाकर शेंडगे	24-28
3.	समकालीन हिंदी ग़ज़लों में सामाजिक चेतना	–डॉ. सय्यद शौकत अली	29-33
4.	आहत हृदय की रागात्मक अभिव्यक्ति समकालीन हिंदी दलित कविता	–डॉ. ऋचा राय	34-44
5.	दुष्यंतकुमार के काव्य में राजनीतिक चेतना	–डॉ. रजनी शिखरे	45-49
6.	शमशेर बहादुर सिंह की कविता में समकालीनता	–डॉ. सचिन गपाट	50-56
7.	राजनीतिक चेतना के सच्चिदानंद - नागार्जुन	–डॉ. रेखा गाजरे	57-62
8.	जयप्रकाश कर्दम के खण्डकाव्य 'राहुल' में दलित चेतना	–डॉ. इबरार खान	63-68
9.	समकालीन हिंदी कविता में सामाजिक चेतना (नागार्जुन की कविताओं के विशेष सन्दर्भ में)	–डॉ. संगिता आहेर	69-75
10.	समकालीन हिंदी कविता में राजनीतिक चेतना	–डॉ. संजय जाधव	76-80
11.	आदिवासियों की दास्तान को बयान करती समकालीन हिंदी कविता	–डॉ. मुमताज बी.एम.	81-84
12.	दुष्यंतकुमार के काव्य में सामाजिक चेतना	–डॉ. सुरज चौगुले	85-91
13.	धूमिल के काव्य में सामाजिक चेतना	–डॉ. शंकर शिवशेट्टे	92-97

Scanned with CamScanner

5.

दुष्यंतकुमार के काव्य में राजनीतिक चेतना

–डॉ. रजनी शिखरे

सन् 1960 के पश्चात् लिखी गयी हिंदी कविता को साठोत्तरी या समकालीन हिंदी कविता के नाम से जाना जाता है। समकालीन हिंदी कविता अपने समय के प्रति प्रतिबद्ध होने से उसमें राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक परिवेश प्रतिबिंबित हुआ है। सन् 1947 में देश आजाद हुआ। आजादी के पश्चात् देश के बिगड़ते चित्र और चरित्र ने हमें मोहभंग की पीड़ा से गुजरने पर मजबूर किया। आजादी के बाद का मोहभंग, आर्थिक-सामाजिक विषमता, साम्प्रदायिकता, धार्मिक उन्माद, भाषावाद, प्रांतवाद, भ्रष्टाचार, आतंकवाद आदि ने देश की एकता तथा अखंडता के सामने कई प्रश्न चिह्न उपस्थित किये। इन प्रश्नों से जूझते हुए समकालीन हिंदी कवियों ने देश के नवनिर्माण के लिए आवाज उठायी। समकालीन हिदी कवियों की रचनाओं में भ्रष्ट राजनीति तथा राजनेताओं के प्रति आक्रोश फूट पड़ता है। डॉ. संतोष कुमार तिवारी कहते हैं- ''राजनीति समकालीन कविता में घुल-मिलकर आई है। यही वजह है कि आक्रोशमय व्यंग्य और मारक चुटीली शब्दावली समकालीन कविता में इस्तेमाल की गई है।''[1] समकालीन हिंदी कविता में राजनीतिक चेतना को लेकर काव्य सृजन करने वाले कवियों में नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, मुक्तिबोध, धूमिल, दुष्यंतकुमार, रघुवीर सहाय, सर्वेश्वरदयाल सक्सेना, अरुण कमल, उदयप्रकाश आदि रचनाकारों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

दुष्यंतकुमार समकालीन हिंदी कविता के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। आपने अपनी काव्य रचनाएँ 'आवाजों के घेरे', 'सूर्य का स्वागत', 'जलते हुए वन का वसंत', 'एक कंठ विषपायी' तथा 'साये में धूप' के माध्यम से अपने समसामयिक यथार्थ को बयान किया। डॉ. संतोषकुमार तिवारी इस संदर्भ में ठीक ही कहते हैं- ''उनकी रचनाएँ न तो देहनीति के चक्कर में उलझी और न नाटकीय अदाकारी का नमूनी बनी। दिखाऊ आक्रोश और फ़िकरे बाज़ियों से उनकी कविताएँ बहुत दूर हैं। उन्होंने जीवंत भाषा में समकालीन यथार्थ का साक्षात्कार किया है और चालू मुहावरों तथा सरलीकरण के चक्कर से दूर रहकर रचना को तमाशाई होने से बचाया है। उन्होंने अवरोधक शक्तियों का

Scanned with CamScanner

विरोध करते हुए मानवीय सम्बन्धों की सही भूमिका को परखा है।''[2] दुष्यंतकुमार की रचनाओं में समकालीन राजनीतिक परिवेश का यथार्थ चित्रण देखने को मिलता है।

आजादी के बाद का मोहभंग, राजनेताओं की चरित्रहीनता, भाई-भतीजावाद, भ्रष्टाचार, राजनेता तथा पूँजीपतियों की साँठ-गाँठ, आम-आदमी की अभावग्रस्तता से उपजी पीड़ा आपकी रचनाओं में चरमोच्च रूप में पायी जाती है। सन् 1947 में देश आजाद हुआ तत्पश्चात् हमने प्रजातंत्र अपनाया। प्रजातंत्र शोषण-तंत्र में तब्दील होने से आजादी से मोहभंग हुआ। आजादी के बाद बढ़ता अंधकार, दरख्तों के साये में लगती धूप, बंजर धरती, झुलसे पौधे, बिखरे काँटे तथा तेज हवा देश की व्यथा-कथा को बयान करती हैं। दुष्यंतकुमार मोहभंग की पीड़ा को बयान करते हुए कहते हैं-

यहाँ दरख्तों के साये में धूप लगती है,
चलो यहाँ से चले और उम्र भर के लिए।''[3]

आजादी के बाद नेता और प्रजा के बीच बने भेड़िया और भेड़ के रिश्तों ने जनतंत्र को भेड़ियातंत्र बना दिया। भेड़ियों द्वारा चुनाव के समय दिये जाने वाले आश्वासनों, प्रलोभनों, वायदों से जनता हर बार ठगी जाती है। अपना तथा अपने परिवार के विकास को ही देशसेवा मानने वाले भेड़ियों की कथनी और करनी के दोगलेपन को बेनकाब करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं-

''जनता की सेवा करने के भूखे/सारे दल भेड़ियों से टूटते हैं
ऐसी-ऐसी बातें/और ऐसे-ऐसे शब्द सामने रखते हैं
जैसे कुछ नहीं हुआ है /और सब कुछ हो जाएगा।''[4]

बहुरूपियों की तरह अपने रूप बदलने वाले राजनेता, मंत्री तथा जनता के सेवकों को जनता जनार्दन से कोई सरोकार नहीं। मंत्री को जनता के विकास की नहीं अपनी मैना की उदासी की चिंता अधिक सताती है। इसीलिए आजादी के सत्तर साल बाद भी आम-आदमी रोटी, कपड़ा, मकान जैसी प्राथमिक जरूरतों को पूर्ण करने में अपना जीवन खपा रहा है। कृषि प्रधान देश में बढ़ती कर्ज की मार से जहाँ एक ओर किसान आत्महत्याएँ करने के लिए विवश हैं वहीं दूसरी ओर इस देश के तारणहार पूँजीपतियों की कर्ज माफी के लिए तत्पर दिखाई देते हैं। इसी कारण कई पूँजीपति इस देश को चूना लगाकर दिन दहाड़े भाग गये और देश के चौकीकार सिर्फ देखते ही रह गये। पूँजीपति और राजनेताओं की साँठ-गाँठ के कारण देश का पतन हो रहा है। देश के रहनुमाओं की बदौलत हुई दुर्दशा को बयान करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं-

''तुम्हारा आभारी हूँ रहनुमाओं !
तुम्हारी बदौलत मेरा देश / यातनाओं से नहीं
फूल-मालाओं से दबकर मरा है।''[5]

Scanned with CamScanner

राजनेताओं में सत्ता, अधिकार लिप्सा, प्रतिष्ठा तथा आदर्शों की भूख पायी आती है। भ्रष्टाचार भ्रष्ट राजनीति तथा लाल-फीताशाही की उपज है। राजनेताओं के भ्रष्टाचार की भूख दिनों-दिन बढ़ती जा रही है। घोटालों के आंकड़े आँखें चौकाने वाले हैं। स्वीस बैंक में जमा राजनेताओं का काला-धन भ्रष्टाचार के काले साम्राज्य को दर्शाता है। गांधी जी के देश के अहिंसक नेताओं द्वारा पैसा खाने तथा पैसों की हेरा-फेरी को बेनकाब करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं-

"दुनिया में सब भूखे होते हैं / सब भूखे .... ।
कोई अधिकार और लिप्सा का .
कोई प्रतिष्ठा का / कोई आदर्शों का
और कोई धन का भूखा होता है ....
ऐसे लोग अहिंसक कहाते हैं
मांस नहीं खाते / मुद्रा खाते हैं।" [6]

भ्रष्टाचार गली से लेकर दिल्ली तक फैला हुआ है, वह सर्वव्याप्त है और उसकी वाहिका है- लालफीताशाही। इस लालफीतासाही तथा फाईल तंत्र के कारण ही विकास की गंगा आम-आदमी तक पहुँच नहीं पाती। भ्रष्टाचार की भ्रष्ट कहानी को बयान करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं-

"यहाँ तक आते-आते सूख जाती है कई नदियाँ
मुझे मालूम है पानी कहाँ ठहरा हुआ होगा।" [7]

भ्रष्टाचार, बेरोजगारी, आतंकवाद, बढ़ती अराजकता, आर्थिक-सामाजिक विषमता, साम्प्रदायिक उन्माद, जातीयता, भाषावाद, प्रांतवाद, मूल्य को ताक पर रखकर किये जाने वाले समझौते, दो जून की रोटी के लिए तरसता आम-आदमी, कुपोषण की समस्या से दम तोड़ते बच्चे, देश का भविष्य तथा हिन्दुस्तान की सही तस्वीर को हमारे सामने रखते हैं। दुष्यंतकुमार कहते हैं-

"इस कदर पाबंदी-ए-मजहब कि सदके आपके
जब से आज़ादी मिली है मुल्क में रमजान है।
कल नुमाइश में मिला वो चीथड़े पहने हुए
मैंने पूछा नाम तो बोला कि हिन्दुस्तान है।" [8]

जिस अराजकतावादी दौर से इस समय हम गुजर रहे हैं, उसकी कल्पना हमने कभी स्वप्न में भी नहीं की थी। आजादी के बाद देश की बिगड़ती सूरत को देखकर हर आदमी परेशान है। अतः दुष्यंतकुमार जनता के हृदय में क्रांति की भावना जगाकर उन्हें परिवर्तन के लिए प्रवृत्त करते हुए कहते हैं-

Scanned with CamScanner

"सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,
मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।
मेरे सीने में नहीं तो तेरे सीने में सही,
हो कहीं भी आग, लेकिन आग जलनी चाहिए।"[9]

सूर्य दुष्यंतकुमार का प्रिय प्रतीक है। जो अंधकार रूपी निराशा दूर कर आशा की किरण लेकर आता है। इसलिए दुष्यंतकुमार सूर्य के स्वागत के लिए तत्पर दिखाई देते हैं क्योंकि वे जलते हुए वन में भी वसंत के आगमन के लिए प्रतीक्षारत है। परिवर्तन के प्रति अपनी संकल्पबद्धता को बयान करते हुए दुष्यंतकुमार कहते हैं-

"स्वयं डूब जाता मैं/यदि मुझको विश्वास यह न होता
मैं कल फिर देखूँगा यही सूर्य/ज्योति की किरणों से भरा-पूरा
धरती के उर्वर-अनुर्वर प्रांगण को/जोतता-बोतता हुआ
हँसता खुश होता हुआ, / ईश्वर की शपथ !
इस अँधेरे में / उसी सूरज के दर्शन के लिए
जी रहा हूँ मैं / कल से अब तक !"[10]

निष्कर्ष

दुष्यंतकुमार समकालीन हिंदी कविता के शीर्षस्थ रचनाकार हैं। आपने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक स्थितियों को आईना दिखाते हुए जनता जनार्दन की वकालत की। राजनेताओं और पूँजीपतियों की साँठ-गाँठ, सत्ता प्राप्ति के लिए किये जाने वाले समझौते, वंशवाद, भाई-भतीजावाद, मूल्यहीनता के चलते इस दौर में जनतंत्र जंगलतंत्र बनकर न रह जाए इसलिए दुष्यंतकुमार अपनी काव्य रचनाओं के माध्यम से भ्रष्ट राजनीति के विरुद्ध आवाज उठाते हैं। जनता तथा जनतंत्र के प्रति दुष्यंतकुमार की प्रतिबद्धता उसकी राजनीतिक चेतना को सार्थकता प्रदान करती है। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है किं देश-प्रेम की भावनाओं से ओत-प्रोत राजनीतिक चेतना दुष्यंतकुमार के काव्य में चरमोच्च रूप में पायी जाती है।

संदर्भ

1. डॉ. संतोष कुमार तिवारी, नये कवि : एक अध्ययन भाग-5, पृ. 18
2. डॉ. संतोष कुमार तिवारी, नये कवि : एक अध्ययन भाग - 3, पृ. 111-112
3. दुष्यंतकुमार, साये में धूप, पृ. 13
4. दुष्यंतकुमार, जलते हुए वन का वसंत, पृ. 44
5. दुष्यंतकुमार, जलते हुए वन का वसंत, पृ. 59
6. दुष्यंतकुमार, एक कंठ विषपायी, पृ. 65

Scanned with CamScanner

7. दुष्यंतकुमार, साये में धूप, पृ. 15
8. दुष्यंतकुमार, साये में धूप, पृ. 57
9. दुष्यंतकुमार, साये में धूप, पृ. 30
10. दुष्यंतकुमार, सूर्य का स्वागत, पृ. 53

सहयोगी प्राध्यापक एवं हिंदी विभागाध्यक्ष
र.भ. अट्टल महाविद्यालय,
गेवराई जि. बीड

❖

Scanned with CamScanner